7

बगीचे का रख-रखाव

पौधों को सही तरीके से उगाने (वृद्धि) के लिए एक विशेष प्रकार की देखभाल आवश्यक होती है। कुछ पौधे जलवायुवीय दशाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं और कुछ मुरझा जाते हैं और यदि कई बार विपरीत परिस्थितियाँ होने के कारण पौधे मर भी जाते है। यदि आप फूल वाले पौधों को लगाना चाहते हैं और आशान्वित है कि अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे, आपको केवल पानी देना है, ऐसा बिल्कुल नहीं है, बल्कि आपको कुछ ज्यादा ध्यान देने की जरुरत होगी और अपने बगीचे में से कुछ अनावश्यक पौधे (खरपतवार) को हटाना भी होगा। आपको कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं/क्रियाकलाप जैसे छंटाई और रोगों को भी नियंत्रित करने की आवश्यकता है।

एक स्वस्थय बगीचे को प्रत्येक बदलते मौसम में नियंत्रित रख रखाव की जरुरत होती है। अधिकतर पौधों को सूर्य का प्रकाश, पानी और पोषक तत्वों की आवश्यकता अच्छे उत्पादन के लिए होती है। अक्सर बगीचे के रख रखाव से पीडक और रोगों से बचाव को भी शामिल किया जाता है। इसके लिए संयम की आवश्यकता अधिक होती है। यदि आप नियमित अंतराल पर बगीचे का रख रखाव करने का निर्णय लेते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढने के पश्चात् आप-

- बागवानी का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- बागवानी में प्रयुक्त होने वाले औजारों की पहचान और उसका उपयोग कर पायेंगे;

- पौधे रोपने से पूर्व जमीन/भूमि तैयार कर पायेंगे;
- पानी, निराई, पतवार हटाना और कम्पोस्टिंग (खाद) डालने आदि के विभिन्न क्रियाकलापों को उपयोग में ला सकेंगे; और
- जैविक खाद तैयार कर सकेंगे और साथ ही साथ अच्छी खाद की पहचान कर पायेंगे।

7.1 बागवानी का अर्थ

बागवानी पौधों को उगाने और खेती करने की प्रक्रिया है जो कि उद्यान विज्ञान या बागवानी का एक भाग होता है। बगीचों में अक्सर सजावटी पौधों को उनके फूलों, पत्तियों या फिर समूची दिखावट; उपयोगी पौधे जैसे सब्जियां, फल और शाक (औषधीय) के उपयोग के लिए उगाया जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार ऐसा कोई पौधा नहीं है जिसका औषधीय महत्व न हो। इसीलिए पौधों को औषधीय या फिर सजावट के उपयोग के लिए भी उगाया जाता है।

बागवानी को अधिकतर लोग एक आरामदायक क्रियाकलाप मानते हैं। यह एक कला और व्यवसाय है। ये भूमि के एक छोटे से टुकडे या भू परिदृश्य को स्वच्छ, स्वस्थय, सुरक्षित और आकर्षित बनाए रखता है। आवासीय बागवानी घर के नजदीक की जाती है, एक ऐसा स्थान जिसे बगीचा कहा जाता है। बगीचा सामान्यता घर के पास की जमीन पर ही स्थित होता है, लेकिन यह छत, बालकनी या फिर घर की खिड़की पर भी बनाया जा सकता है।

बागवानी गैर-आवासीय क्षेत्रों में जैसे पार्क, मनोरंजन पार्क और पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थल और होटल के बगीचे में भी की जाती है। इस तरह के बगीचों की देखभाल के लिए माली की नियुक्ति की जाती है।

माली की विशेषताएं/गुण

- प्रकृति प्रेमी और बाहरी दुनिया को जानने वाला हो।
- शारीरिक रूप से स्वस्थय हो और शारीरिक काम करने में सक्षम हो।

- पौधों और पर्यावरण के बारे में जानकारी रखता हो।
- प्रबंधन की अच्छी कुशलता हो।
- व्यावहारिक हो और समस्या के निराकरण का कौशल आता हो।
- सही औजार/उपकरण प्रयोग करने की क्षमता रखता हो।

7.2 बागवानी में काम आने वाले औजार

किसी भी कार्य/प्रक्रिया को अच्छे ढंग से करने के लिए उपयुक्त औजार प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। बागवानी में काम आने वाले औजारों का नीचे वर्णन किया गया है-

1. करनी/खुरपी/कन्नी (Trowel)

चित्र 7.1 कन्नी/खुरपी

एक खुरपी/कन्नी सामान्यता: छोटी, केवल हाथ से खोदने, उलीचन (स्कूपिंग Scooping) फैलाने या फिर गंदगी या अन्य ढेर लगे पदार्थों को हटाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है। बागवानी और उद्यान विज्ञान में खुरपी पौधे और गमले लगाने में काफी मदद करती है। छेद खोदने और मिट्टी के ढेले तोडने के लिए भी काफी उपयोगी है। बागवानी में काम आने वाली खुरपी (कन्नी) मजबूत, संकरे और नुकीले ब्लेड वाली होती है। ये क्यारियां बनाने, हल रेखा बनाने और निराई करने के लिए भी अच्छी होती है।

2. बेलचा

बेलचा-खुदाई, सामान उठाने और फिर बहुत सारे पदार्थ जैसे मिट्टी, कोयला,

चित्र 7.2 बेलचा

कंकड, पत्थर को उठाने वाला औजार है। यह हाथ से चलाये जाने वाला औजार है जिसका ब्लेड चौडा होता है। जिस पर मध्यम लम्बाई का हैंडल लगा होता है। बेलचे के ब्लेड अक्सर लोहे की चादर या कठोर (सख्त) प्लास्टिक से बनायी जाती है और काफी मजबूत होती है। अक्सर बेलचे के हैंडल लकडी के बनाए जाते हैं।

3. फार्क हो (Fark hoe) लोहे वाली कुदाली (फावडा)

चित्र 7.3 फार्क हो

यह औजार बहुउद्देशीय औजार है जो रख रखाव के काम आने वाला औजार है। यह बटोरने, बेलचा और मिट्टी उठाने वाला औजारों में से एक है। यह हल्के वजन वाला औजार मिट्टी और ढेले तोडने, खाद मिलाने, मिट्टी में से अनावश्यक पौधों (खद-पतवार को साफ करने), पतझड़ में गिरी पत्तियों को निकालकर मिट्टी को समतल करने और भी कई अन्य प्रकार के कार्य करने में काम आता है।

4. लंबे हत्थे वाला फावडा (कुदाली)

बीजों की रोपाई, क्यारियाँ, नाली बनाना (खांच), बीज बोने के लिए बनाये छिद्रों, बीजों को ढकने, मिट्टी भरने और जंगली घास को काटने और हटाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

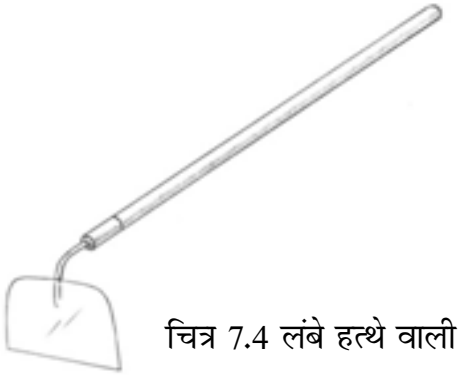

चित्र 7.4 लंबे हत्थे वाली कुदाली (फावडा)

5. दराती/हंसिया/कतरनी (Lappers)

यह एक तरह की लंबे हत्थे वाली कतरनी (कैंची) होती है। जिससे टहनियों और छोटी शाखाओं को काटा जाता है। यह बगीचे में हाथ से चलाये जाने वाला सबसे बड़ा औजार है।

चित्र 7.5 दराती/कतरनी

इसे चलाने के लिए अक्सर दोनों हत्थों का प्रयोग करते हैं और हैंडिल लगभग 30 सें.मी. और 91 सें.मी. लंबा होने से काफी अच्छी तरह से चलाने में उत्तोलक की भांति कार्य करता है।

6. ठेला

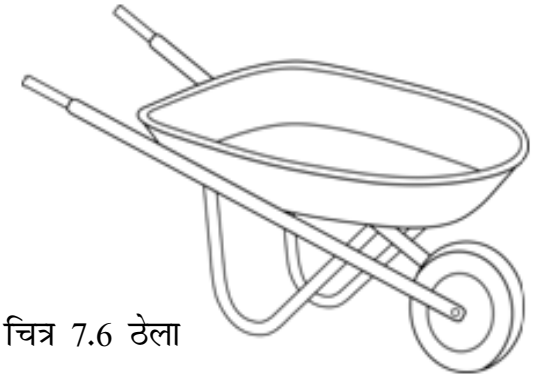

चित्र 7.6 ठेला

यह अच्छा कहे जाने वाला मजबूत ठेला होने के साथ ज्यादा हल्का भी हो तो इसमें भरा हुआ समान आसानी से ले जाया जा सकता है। इसका प्रयोग थैलों, खाद, पौधे और बगीचे में पडे कचरे को ले जाने में करते हैं।

7. बगीचे में काम आने वाला चाकू

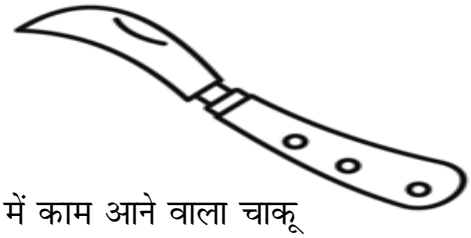

चित्र 7.7 बगीचे में काम आने वाला चाकू

यह एक छोटा चाकू है जो अक्सर बगीचे में तारों, लकडी (टहनी) और फूल, फलों और सब्जियों के पौधे को सजाने (छांटने) और भी अन्य कार्यों में भी इसका प्रयोग होता है।

8. बगीचे में काम आने वाली कतरनी (प्लास)

चित्र 7.8 बगीचे में काम आने वाला प्लास

किसी भी बगीचे को निरंतर रख रखाव की जरुरत होती है और एक अच्छे बगीचे के लिए किसी भी प्रकार की कटाई के काम के लिए बगीचे में काम आने वाला प्लास काफी उपयोगी औजार है।

9. दस्ताने

चित्र 7.9 दस्ताने

जब हम काम कर रहें हों तो बेकार के घाव (कटने) से बचने के लिए दस्ताने मदद करते हैं।

10. बाल्टी

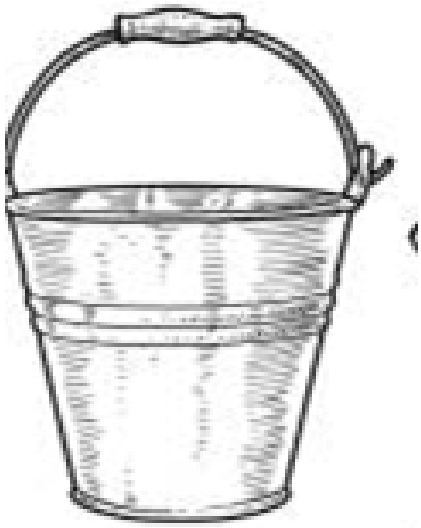

चित्र 7.10 बाल्टी

बगीचे में पानी ले जाने के काम आती है।

11. हजारा (Watering Can)

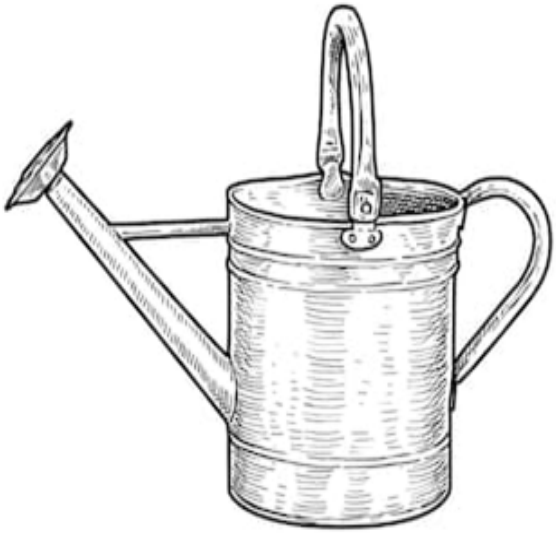

चित्र 7.11 हजारा

पौधों को पानी देने के काम आता है।

12. बगीचे में पानी देने वाला हौज

चित्र 7.12 गार्डन वाटर हौज

बगीचे में पानी देने के लिए गार्डन वाटर हौज की जरुरत पडती है। हौज अक्सर रबड या विनाइल से ही बनाए जाते हैं। रबर ज्यादा मंहगी होती है। इस बात का अवश्य ध्यान रखें के हौज लंबी हो ताकि बगीचे के सभी भागों में आसानी से पहुँच जाये।

औजारों की देखभाल

साफ सफाई - अपने औजारों को बायर ब्रुश (जाली के ब्रुश) से अच्छी तरह रगड-रगड कर हौज से धोना चाहिये ताकि उसमें लगी मिट्टी धुल जाय। किसी भी घरेलू ब्लीच के घोल में अपने औजारों को डुबोकर रख दें। यदि कोई उपकरण पौधे के रस (जूस) में डूबा हुआ हो तो उस उपकरण के लिए तारपीन के तेल का प्रयोग किया जा सकता है और जंग लगे हुए उपकरणों को सिरके में भिगोकर रखते हैं। लकडी के दस्ते को तारपीन के तेल से रगडकर साफ करना चाहिये।

तीक्ष्णता (Dharpening) - कुदाली, कैंचा, कैंची, चाकू, दराती, प्रून्स (एक प्रकार की कैंची) और दराती/बेलचों आदि को कुछ समय बाद या नियमित रूप से धार तेज करने की जरुरत होती है।

संग्रहण/भंडारण - सभी औजारों को सफाई तथा पोंछकर, स्वच्छ और शुष्क स्थान पर रखना चाहिये।

पाठगत प्रश्न 7.1

कालम 'क' का कालम 'ख' के साथ मिलान कीजिए-

	कालम 'क'		कालम 'ख'
1.	कन्नी/खुरपी	i.	गंदगी और हाथों में घाव
2.	दराती/कतरनी	ii.	कलम काटना
3.	लंबे हत्थे वाली कुदाली	iii.	बगीचे का कूडा करकट ले जाना
4.	बगीचे में काम आने वाला चाकू	iv.	बीजों की बुवाई
5.	ठेला	v.	लंबे हत्थे वाली कैंची
6.	प्लास (कतरनी)	vi.	छंटाई
7.	दस्ताने	viii.	खोदना, पोला बनाना

7.3 बागवानी संबंधित प्रक्रियाएं

1. रोपण के लिए मिट्टी तैयार करना-

- आपको मिट्टी के प्रकार को निर्धारित करना होगा और उसका मिश्रण बनाने की प्रक्रिया/योजना तैयार करनी पडेगी।

  ⇨ मिट्टी में पानी रुकता तो हो परन्तु अच्छी तरह से बहता नहीं है। यह अक्सर काफी क्षारीय होती है और उसे प्रयोग में लाने योग्य बनाने के लिए काफी मात्रा में जैविक/कार्बनिक पदार्थों को मिलाना पडता है।

  ⇨ रेतीली मिट्टी अच्छी तरह से बह जायेगी लेकिन उसको लगातार पानी देने (सिंचाई) की आवश्यकता होती है। इस मिट्टी को उपयोगी (सुधारने) बनाने के लिए भी कार्बनिक पदार्थों को मिलाने की आवश्यकता होगी।

  ⇨ अत्याधिक जैविक मृदा अक्सर उच्च अम्लता वाली होती है और

उसमें अच्छी जल निकासी और जल धारण करने की क्षमता होती है। आपको इस मृदा का जल धारण स्तर बढाने के लिए चूने को डालने की जरुरत होती है।

- आपको पौधे के लगाने के लिए पहले मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में जैविक/कार्बनिक पदार्थों (खाद) को मिलाना होगा।
- प्रत्येक मौसम में आपको मिट्टी को खोदना होगा और वायु प्रवाह के योग्य बनाना होगा। मिट्टी की गुडाई करनी होगी।
- एक छेद (छिद्र) खोदकर आप अच्छी जल निकासी के लिए मिट्टी की जांच करिये। कम से कम एक फुट यानि 30 सें.मी. तक गड्ढा खोदिये और उसे पानी से भर दीजिये। यह भरा हुआ पानी लगभग 15 मिनट में निकल जाना चाहिये। यदि इसमें इससे ज्यादा देर लगती है तो नालियों (पानी निकास) में सुधार हेतु जल्दी से जल्दी कदम उठाने पडेगें।

2. बीजों का चयन-

- बीज हमेशा प्रसिद्ध बीज कम्पनी से ही खरीदें।
- आप अपने घर पर उपलब्ध बीजों का भी चयन कर सकते हो।
- आप एक ऐसी किस्म का चयन करें जो आपके यहां की जलवायु में अच्छी उपज दे सके।
- जब आप बीज का चयन कर लें तो यह सुनिश्चित करें कि आपके बीज निम्नलिखित बातों से मुक्त हों जैसे-
  - ⇨ हल्के
  - ⇨ धब्बे
  - ⇨ जंग
  - ⇨ एफिडस
  - ⇨ कृमि (कीड़े)
  - ⇨ विषाणु

3. बीजों की बुवाई/बीज बोना

- समय महत्वपूर्ण है–बुवाई के समय न ज्यादा ठंडा और न ज्यादा नमी हो।
- तापमान जरुरी है–नियमानुसार, सैद्धांतिक रूप से अधिकतर प्रजातियों के बीज (लेकिन सभी नहीं) सामान्यतया हल्के तापमान में काफी अच्छी तरह से अंकुरित होते हैं।
- नमी जरुरी है–नियमानुसार/सैद्धांतिक रूप से अधिकांश बीजों का अंकुरण और वृद्धि (विकास) मिट्टी को थोडा नम (मिट्टी छूने पर नम लगे) रखने पर ज्यादा निर्भर करता है।
- सफल अंकुरण के लिए नमी अत्यंत आवश्यक है।
- प्रकाश की तीव्रता भी महत्वपूर्ण है।
- गहराई और दूरी भी आवश्यक है– बीज को काफी गहराई में बोना एक नौसिखिए की बहुत बडी गलती हो सकती है।
- वृद्धि के लिए उपलब्ध स्थान का विचार अवश्य कीजिए। पौधों की वृद्धि के लिए पर्याप्त स्थान जरुरी होता है और उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए वायु प्रवाह की भी समुचित व्यवस्था हो ताकि कई रोगों जैसे फफूंद और धब्बों को कम किया जा सके। यदि आपका बगीचा छोटा है तो उसके लिए झाडी, कम्पोस्ट या फिर बर्तन (गमले) में उगने वाली किस्मों को ही विकसित करें।

4. पानी देना/सिंचाई (Watering)

पौधों को नियमित रूप से पानी दीजिए। गर्मी के मौसम में आप दिन में कम से कम एक बार पानी अवश्य दें। गर्मी के मौसम में पौधों में पानी की मात्रा की क्षति कुछ ज्यादा होती है और वे मुरझा सकते हैं या फिर उनकी वृद्धि रुक सकती है यदि उन्हें पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं दिया जाय। पानी की मात्रा के संबंध में हम किसी को पुष्प प्रजातियों और उन्हें कितनी मात्रा में पानी की आवश्यकता होगी, इस पर विचार करने की जरुरत होगी। अन्य दूसरे कारक जिन पर भी आपको विचार करना होगा उनमें बगीचे की मिट्टी किस तरह की है और उस

टिप्पणी

क्षेत्र में कितनी वर्षा होती है। ज्यादा मात्रा में पानी देना या फिर पानी देने के गलत तरीकों से भी पौधों को कवकीय/फफूंद जैसे रोग लगने की संभावना होती है।

5. उर्वरक/खाद डालना

समय के साथ बगीचे की उर्वरता कम हो जाती है और पौधों के लिए पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। जब भी आप यह ध्यान दें कि मृदा की उर्वर शक्ति क्षीण (कम) हो रही है तो आपको उस मृदा में तुरंत उपयुक्त उर्वरक डालना चाहिये।

फूल वाले पौधों (फूलों) के लिए पानी में घुलनशील या फिर तरल उर्वरक का प्रयोग करना अच्छा होता है। कुछ उर्वरक पौधों को झुलसा भी सकते हैं। यदि उनका अनावश्यक तरीके से इस्तेमाल किया जाए, जैसे कि कभी ज्यादा मात्रा में उपयोग किया जाए या फिर गलत समय पर पौधे में डाला जाए। इस परेशानी से बचने के लिए उर्वरक निर्माता द्वारा बताए गये दिशा-निर्देशों का पालन करना जरुरी हो जाता है। सही उर्वरक का चयन करने के लिए मिट्टी के परीक्षण की मदद ले सकते हैं। जैविक उर्वरक को मिट्टी से मिलने में काफी समय लग जाता है। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता है, वे स्वस्थ मृदा का निर्माण करते हैं।

6. पतवारण (मल्च बनाना)

मल्स (पतवार) एक ऐसी वस्तु है जिसे मृदा की सतह पर फैलाकर या फिर बिछा कर रखा जाता है। एक प्रकार के आवरण के रूप में। यह मृदा में नमी बनाए रखने, अपहण (घास-पात) को कम करने, मिट्टी को ठंडा रखने, मृदा अपरदन को रोकने और पोषक तत्वों को मिलाने के काम आता है। जैविक मल्च भी मृदा की उर्वरता को सुधारने के काम आता है, जैसे ही वे विघटित हो जाते हैं। मल्च के लिए उन वस्तुओं को चुने जिनसे पौधों की सुंदरता खराब न हो/करें। कुछ सुझावित मल्च के घास, पत्तियां, लकडी के तख्ते (चिप्स) और पोलीथिन पेपर शामिल है।

7. खरपतवार को हटाना

खरपतवार मिट्टी में उपस्थित पोषक तत्वों के लिए उपयोगी/लाभकारी पौधों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसके अलावा वे कीटों और बीमारियों द्वारा भी

परेशान कर सकते हैं। इसी क्रम में आपने सबसे अच्छा परिणाम पाने के लिए अपने बगीचे में से सारे अपहन (घास-पात) को निकालना अत्यंत आवश्यक है।

यदि आप छोट से बगीचे में फूल उगाने जा रहे हैं या फिर गमलों और फूलदान में उगा रहे हैं तो आप इन अपहणें (खरपतवार) को जड से उखाड़कर नियंत्रित कर सकते हैं। बड़े बगीचे/उद्यान के लिए आपको कुदाल और खोदनी (गेंती) जैसे बागवानी में प्रयुक्त होने वाले औजारों का प्रयोग करना आवश्यक होगा। प्रत्येक एक हफ्ते बाद खरपतवार को हटाना आवश्यक है।

8. पौधों को पर्याप्त सूर्य का प्रकाश (धूप) उपलब्ध करायें

सूर्य का प्रकाश पौधों के लिए ऊर्जा का स्त्रोत है और इसीलिए आप सुनिश्चित करें कि पौधों को पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश उपलब्ध हो रहा है। कुछ पौधों को प्रतिदिन काफी घंटों तक सूर्य के प्रकाश की जरुरत होती है। जबकि दूसरे उदाहरण स्वरूप दूसरे पौधे जैसे घर के भीतर के पौधों को कुछ घंटों के प्रकाश की आवश्यकता होती है। इसीलिए आपको जानने की आवश्यकता है कि आप यह सुनिश्चित करें कि पौधों को आवश्यक प्रकाश (रोशनी) उपलब्ध हो रही है।

9. पीड़को (कीटों) की रोकथाम (निवारण) और नियंत्रण

पीड़क (कीट) आसानी से पौधों को मार सकते हैं इसीलिए यह जरुरी है कि बगीचे को उनके हमले से बचाया जाए। आप कुछ पीड़कों और कुछ खरपतवारों को अपने बगीचे से जाल जैसे बंधकों (बंधनों) द्वारा रोक सकते हैं। कुछ पीड़क जैसे खटमल, माइटस (कुटकी), एफिडस, सफेद मक्खी (व्हाइट फ्लाइस) और मच्छर के बारे में स्वयं भी जागरूक रहना चाहिए।

यदि पौधों पर पीड़कों द्वारा हमला किया जाता है तो उन हानिकारक जीवों को मारने के लिए किसी एक उपयुक्त पीड़कनाशक (कीटनाशक) का उपयोग करने की आवश्यकता पडेगी।

10. रोगों की रोकथाम और नियंत्रण

पीड़कों (कीटों) की तरह रोग भी फूलों के लिए काफी हानिकारक होते हैं। अधिकांश पादप रोग कवकों (फफूंद), जीवाणु (बैक्टीरिया) और विषाणु (वायरस) से होते हैं। आप कवकीय रोगों (फंगल रोगों) को बगीचे में पानी के अत्याधिक प्रयोग और बगीचे की निराई और छंटाई जैसे तकनीकों के प्रयोग से बच सकते हैं।

11. पौधों की जानवरों से सुरक्षा

कुछ जानवर जैसे गाय और बकरी पत्ते खाकर पौधों को नुकसान पहुंचाते है। अन्य जानवर जैसे कुत्ते और बिल्लियां भी बगीचे के पौधों को नष्ट कर सकते हैं। अपने बगीचे को जानवरों से बचाने के लिए बाड़ लगाना या फिर बाधा (कंटीले तार) लगा सकते हैं।

12. पौधों की कटाई और छंटाई

कटाई पौधे के तने की पार्श्व वृद्धि को बढाने के लिए उसके शीर्ष (सिरों) को हटाने और उसके आकार को बढाने की प्रक्रिया है।

शाखाओं की वृद्धि को बढाने के लिए और अधिक फूल उगाने के लिए कटाई-छंटाई प्रक्रिया को बढावा देते है।

13. पौधे को छितराना और काटना

छंटाई करने की प्रक्रिया के शेष पौधे में वृद्धि के लिए अतिरिक्त पौधों को हटाने का कार्य किया जाता है। दूसरी ओर तोड़ना (चुनना) क्रिया के अंतर्गत अवांछनीय पौधों को हटाने की प्रक्रिया (जिसमें शामिल है-कमजोर, पीडित या रोगी) में शेष पौधों को विकसित होने का ज्यादा अवसर या पीडकों को नियंत्रित किया जाता है।

14. पौधों को सहारा देना (बांधना)

स्टेकिंग (बांधना) पौधों के तनों को सहारा प्रदान करने के लिए किया जाता है। इससे एक आरोही रॉड/छड को भूमि में स्थिर किया जाता है और उसे तने पर

बांध दिया जाता है। यह कमजोर तने वाले पौधों में किया जाता है या जहाँ पर पौधों को किसी निश्चित दिशा में जाना हो।

15. पौधे के बेकार भागों को हटाना (निर्गमन)

पौधे के बेकार भाग हटाना (डेड हेंडिग) वह प्रक्रिया है जिससे पुराने या मृत (मुरझाये) फूलों को पौधे से अलग करके फुलवारी को अधिक खिलने के लिए प्रोत्साहित करना है। इससे पौधों को स्वस्थ्य रखने में मदद मिलती है।

16. मृदा का बदलना (प्रति स्थापन)

मिट्टी समय के साथ अपनी (उर्वरता) भौतिक गुण खो देती है। पौधों के सतत् विकास (वृद्धि) के लिए उसकी क्षमता भी कम हो जाती है। इसीलिए समय-समय पर मिट्टी को बदलते रहना भी जरुरी है।

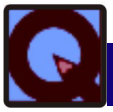

पाठगत प्रश्न 7.2

निम्नलिखित के बारे में केवल एक वाक्य में लिखिए-

1. खाद डालना : .....
2. मल्च बनाना :
3. खरपतवार हटाना :
4. कटाई : .....
5. छंटाई : .....

6 छितराना : .....

7.4 जैविक खाद

जैविक खाद मृत पौधों और वस्तुओं के अवशेष से बनती है और उसमें पादप पोषक तत्व होते हैं। मृदा में इनका प्रयोग करने से उसकी फसल उत्पादन क्षमता

भी बढ जाती है। खेतों के लिए खाद–गाय या भैंस के गोबर, पौधों से प्राप्त पत्तियों और रसोई के अवशेष (फल, सब्जियों के छिलके आदि) से बनायी जाती है और फलीदार फसलों को भी हरी खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है।

कम्पोस्ट (खाद) के लाभ –

- मिट्टी की उर्वरा शक्ति के स्तर को बरकरार रखती है।
- मृदा के पोषक तत्वों के स्तर में वृद्धि के कारण मृदा की संरचना और वातन में सुधार आता है। (वायु प्रवाह की क्षमता)।
- पौधों में पोषक तत्वों और नमी को बनाए रखने में मदद करती है।
- अच्छी तरह से विघटित कम्पोस्ट मृदा की अभिक्रिया प्रतिक्रिया और मृदा के तापमान को नियंत्रित करती है।
- सूक्ष्म जीवीय क्रियाकलापों को बढ़ाती है जिससे व्यवहारिक रासायनिक उर्वरकों के खनिजीकरण में मदद मिलती है। साथ ही साथ फसलों के लिए अधिक मात्रा में उपलब्ध होती है।

कम्पोस्ट तैयार करना

- खाद–सामग्री को एक गड्ढे या ढेर के रूप में एकत्रित करिये। यदि ढेर में खाद बन रही है तो उस जगह को एक समान (समतल) करना चाहिए और उसे वर्षा से भी बचाना चाहिए ताकि पोषक तत्व बह न जाएं।

चित्र 7.13 कम्पोस्ट को पानी देना

चित्र 7.14 कम्पोस्ट में बदलना

- कम्पोस्ट कवक (फफूंद) और जीवाणुओं (बैक्टीरिया) द्वारा विघटित होती है। समुचित सूक्ष्मजीवी की वृद्धि के लिए उसमें कुछ उत्प्रेरक जैसे लकडी, राख आदि को मिला देते हैं।
- खाद को नम रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी डालते हैं। ताकि पदार्थ स्पंजी रहे, न तो ज्यादा सूखा और न ज्यादा नमी वाला।
- समुचित वातन के लिए कम्पोस्ट पिट या ढेर को 30-40 दिन के अंतराल पर पलटते हैं।
- इस कम्पोस्ट पिट या ढेर को मिट्टी या पुआल या प्लास्टिक की चादर (शीट) से ढक दीजिए। यह प्रक्रिया अपघटन को बढाती है।

अच्छी बनी हुई कम्पोस्ट खाद की विशेषताएं (गुण)

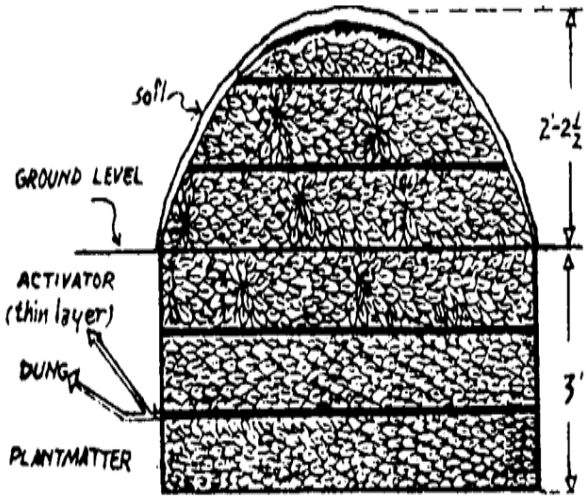

चित्र 7.15 कम्पोस्ट पिट का क्रास सेक्शन

- भुरभुरी
- हाथ में चिपकती नहीं
- गहरे भूरे या काले रंग की होती है।
- मूल सामग्री को अलग नहीं किया जा सकता है।

7.5 अवसर

बागवानी में कोई भी व्यक्ति रोजागार के बहुत से अवसर पा सकता है या फिर स्व-रोजगार भी कर सकता है। बागवानी कृषि विज्ञान की वह शाखा है जो पौधे उगाने की कला, विज्ञान और व्यवसाय से संबंधित है। इसमें ऐसे पौधे शामिल किये गये हैं जो खाने योग्य और सजावटी हैं। इसमें पादप का संरक्षण, जीर्णोद्धार, भू-परिदृश्य, डिजाइन और निर्माण को शामिल किया जाता है।

आपने क्या सीखा

- बागवानी का अर्थ
- बागवानी के औजार
- माली के गुण/योग्यता
- औजारों की देखभाल
- बीजों का चयन
- पानी देना
- मल्च बनाना
- मृदा तैयार करना
- बीज बोना
- खाद डालना
- खरपतवार अलग करना
- सूर्य का प्रकाश उपलब्ध कराना।

- पीड़कों (कीटों) को रोकना और नियंत्रित करना।
- बीमारियों को रोकना और नियंत्रित करना।
- जानवरों से पौधों का बचाव।
- पौधों की कटाई छटाई करना।
- पौधे का बढना (आरोहण)
- पुरारे (जीर्ण) भागों को हटाना।
- जैविक खाद तैयार करना।
- कम्पोस्ट तैयार करना।
- अच्छी तरह अपघटित कम्पोस्ट के लक्षण

पाठांत प्रश्न

1. बागवानी की विधियां क्या हैं?
2. माली की योग्ताओं की सूची बनाइये।
3. बागवानी में काम आने वाले औजारों की सूची तैयार कीजिए। और किन्हीं पांच के बारे में वर्णन कीजिए।
4. आप बीज बोते समय किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?
5. कम्पोस्ट बनाने की विधि का वर्णन कीजिए।
6. अच्छी तरह से तैयार की गई कम्पोस्ट की क्या विशेषताएं होती हैं?
7. कम्पोस्ट डालने के क्या लाभ हैं?

टिप्पणी

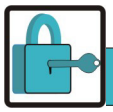

उत्तरमाला

7.1

1. (vii)
2. (v)
3. (iv)
4. (ii)
5. (iii)
6. (vi)
7. (i)

7.2

1. मिट्टी के पोषक तत्वों को बढाने के लिए उर्वरकों को डाला जाता है।
2. मल्च एक ऐसा पदार्थ होता है जो फैली या रखी हुए एक परत के रूप है जिसे मिट्टी की सतह पर ढका जाता है।
3. अवांछित पौधों को खींचकर हटाने की प्रक्रिया
4. काटना (कटाई) – अतिरिक्त पौधों को हटाने की प्रक्रिया है जिससे शेष पौधों की वृद्धि के लिए समुचित स्थान की व्यवस्था की जा सके।
5. छितराना – इस प्रक्रिया में अवांछित पौधे (जैसे कमजोर, प्रभावित या रोग ग्रस्त) को हटाया जाता है ताकि शेष पौधों को वृद्धि के लिए ज्यादा स्थान मिल सके।
6. पुराने भागों को हटाना – यह किसी पौधें से पुराने या मृत फूलों के सिरों को निकालने की प्रक्रिया है।
7. कटाई–छंटाई – तने के शीर्ष सिरों को हटाने की प्रक्रिया है ताकि पार्श्व वृद्धि और अच्छे आकार को बढने में मदद मिल सके।